सतर्क करने वाली कहानी: मलेरिया के साथ एक परिवार का कटु अनुभव

मलेरिया की वजह से रदिवान अदीसा को अस्पताल जाना पड़ा, पर वह अकेला ही बीमार नहीं हुआ था। (सौजन्य जॉन ईस्टन, शिकागो विश्वविद्यालय अस्पताल

फताई और हनीफत अदीसा और उनकी बच्ची मरयिम 10 साल पहले नाइजीरिया से संयुक्त राज्य अमेरिका आए थे। उसके बाद से अब उनके परिवार में 2 से 11 साल की उम्र के कुल पाँच बच्चे हैं। वे सभी इंडियाना में रहते थे, जहां मिस्टिर अदीसा एक शारीरिक चिकित्सिक (फिजिकिल थेरेपिस्ट) के रूप में कार्य करते थे।

यात्रा की तैयारी

2005 के आखिर में पूरे परिवार को नाइजीरिया जाने का मौका मिला। अपने बच्चों को यात्रा के लिए तैयार करने के लिए, श्रीमती अदीसा ने एक बालरोग विशेषज्ञ से परामर्श किया, जिसने एंटीबायोटिक और दर्द व बुखार की दवाएं लिख दीं, ताकि अगर कोई बीमार पड़े तो वे दवाएं दे दी जाएं।

श्रीमती अदीसा अपने बच्चों को मलेरिया के विरुद्ध भी सुरक्षित करना चाहती थीं, जो कि उनके मूल देश में होने वाली एक खतरनाक बीमारी थी। उन्होंने स्थानीय स्वास्थ्य विभाग से मलेरिया के टीके (वैक्सीन) के बारे में जानकारी मांगी और उन्हें यह सही जानकारी मिली कि अभी तक मलेरिया का कोई टीका (वैक्सीन) नहीं है। पर स्वास्थ्य विभाग ने उन्हें बताया कि ऐसी गोलियाँ हैं, जो मलेरिया के विरुद्ध ली जा सकती हैं। लेकिन श्रीमती अदीसा ने सोचा कि गोलियों का इस्तेमाल तो केवल तब होना चाहिए जब कोई बीमार पड़ जाए; उन्होंने यह बात समझ नहीं आई कि असल में इन गोलियों को मलेरिया के संक्रमण की रोकथाम के लिए भी लिया जा सकता है। फिर, पूरा परिवार मलेरिया की रोकथाम के लिए दवाओं से मिलने वाली सुरक्षा (मलेरिया कीमोप्रोफायलैक्सिस) को लिए बिना ही अपनी यात्रा पर निकल पड़ा।

नाइजीरिया का भ्रमण

नाइजीरिया में कई हफ्तों के दौरान अदीसा परिवार कई स्थानों पर अपने दोस्तों और रिश्तेदारों से मिला, ये स्थान थे: लागोस, अबूजा, कानो और इलोरिन। बच्चों को तो वे इतने अच्छे लगे कि उनमें से कुछ तो वापस संयुक्त राज्य अमेरिका लौटना ही नहीं चाहते थे।

बीमारी विकसित होना

परिवार जनवरी, 2006 के आखिर में इंडियाना लौटा और चार बड़े बच्चों ने फिर से स्कूल जाना शुरु कर दिया। लेकिन दो हफ्तों के बाद उन्हें बुखार, सिरदर्द, फ्लू जैसे लक्षण रहने लगे और वे सुस्त हो गए। दो दिन बाद, स्कूल से श्रीमती अदीसा को कॉल आई कि उनकी 11 साल की बेटी मरयिम को गम्भीर सिरदर्द हुआ है। चिन्तित हो कर वे पांचों बच्चों को पास के क्लीनिक में ले गईं। वहां चार बड़े बच्चों में फ्लू होने की पहचान की गई और मरयिम को बताया गया कि उसके गले में स्ट्रेप्टोकोकस का संक्रमण भी है।

उनका इलाज एंटीबायोटिक तथा दर्द की दवा से किया गया। तीन दिन बाद, श्रीमती अदीसा ने देखा कि उनके दो बेटे, 6 साल के रदिवान और 10 साल के मोहम्मद की आंखें पीली हो गई थीं और एक और बेटा, 4 साल का मंसूर भी ठीक नहीं लग रहा था। वे तीनों को पास के अस्पताल में ले गईं, जहां डॉक्टरों ने उनके रक्त की जांच की ओर मलेरिया होने का शक जाहिर किया। उन्होंने तुरन्त ही लड़कों को अधिक विशिष्ट निदान (रोग-पहचान) और उपचार के लिए यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो हॉस्पिटल्स में भेज दिया, जो ऐम्बुलेंस के जरिए दो घंटों की दूरी पर था।

जिसका डर था वही निकला: मलेरिया

यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो हॉस्पिटल्स के डॉक्टरों ने यह पुष्टि कर दी कि तीनों बच्चों को प्लाज़्मोडियम फाल्सीपैरम की वजह से मलेरिया था। यह किस्म गम्भीर बीमारी और मौत का भी कारण बन सकती है। दस साल के मोहम्मद को मलेरिया ने गम्भीर रूप से बीमार कर दिया था। उसका रक्त बहुत अधिक अम्लीय (लैक्टिक ऐसिडोसिस) हो गया था और रक्त में शर्करा की मात्रा बहुत कम हो गई थी (हायपोग्लायसीमिया)। उसमें रक्त की बेहद कमी हो गई थी और उसका रक्तचाप भी बार-बार कम हो रहा था।

डॉक्टरों ने मोहम्मद को बाल-गहन चिकित्सा इकाई (पीडियाट्रिक इंटेंसिव केयर यूनिट, पीआईसीयू) में भर्ती कर लिया और उसे सांस लेने की मशीन से जोड़ दिया। उन्होंने मोहम्मद की एसिडोसिस और हायपोग्लायसीमिया को ठीक करने के लिए उसे इंट्रावीनस फ्लुइड चढ़ाए; उसके निम्न रक्तचाप को ठीक करने के लिए दवाईयां दीं; मलेरिया द्वारा हुए नुकसान की भरपाई के लिए बड़ी मात्रा में रक्त चढ़ाया; और मलेरिया परजीवी को नष्ट करने के लिए इंट्रावीनस दवाएं दीं।

हालांकि मंसूर और रिदवान की हालत इतनी नाजुक नहीं थी जितनी मोहम्मद की, पर मोहम्मद की तरह उनकी भी आंखें पीली थीं, जो गम्भीर मलेरिया के साथ सम्बद्ध पीलिया का संकेत था। इसके अतिरिक्त, मंसूर में परजीवियों की संख्या बहुत अधिक थी; उसकी हर 20 में से एक लाल रक्त कोशिका, मलेरिया परजीवियों द्वारा संक्रमित थी। डॉक्टरों ने दोनों लड़कों को पीआईसीयू में भर्ती कर लिया, जहां उन्हें मलेरिया-रोधी दवाओं के साथ इंट्रावीनस उपचार दिया गया और रक्त चढ़ाया गया।

एहतियात के तौर पर डॉक्टरों ने परिवार के बाकी दोनों बच्चों के रक्त भी जांच की और पाया कि वे दोनों भी फाल्सीपैरम मलेरिया से संक्रमित थे। अपने भाईयों के एक दिन बाद, दोनों लड़कियां, मरियम और 2 साल की नूरत भी सामान्य बाल चिकित्सा इकाई में भर्ती कर ली गई और उन्हें मलेरिया-रोधी गोलियों से उपचार दिया गया।

बाल गहन चिकित्सा इकाई (पीआईसीयू) में मोहम्मद अदीसा का गंभीर मलेरिया का उपचार किया जा रहा है। (सौजन्य जॉन ईस्टन, शिकागो विश्वविद्यालय अस्पताल)

बीमारी से उबरना

सबसे भाग्यशाली बात यह रही कि अदीसा के पांचों बच्चे इस असाधारण कटु अनुभव से उबर गए। दो दिनों के गहन उपचार के बाद, मोहम्मद की हालत इतनी सुधर चुकी थी कि डॉक्टरों ने सांस लेने की मशीन से उसे अलग कर दिया। तीसरा दिन खत्म होते-होते, मोहम्मद, मंसूर और रिदवान काफी बेहतर महसूस करने लगे और उन्हें सामान्य इकाई में पहुंचा दिया गया। अस्पताल में भर्ती होने के सातवें दिन तक सभी बच्चे पूरी तरह ठीक और मलेरिया से मुक्त हो चुके थे और उन सभी को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।

उनके माता-पिता इस सुखद नतीजे के लिए बेहद शुक्रगुजार हैं। वे सतर्क करने वाली इस कहानी को इस इच्छा से साझा करना चाहते हैं कि इससे मलेरिया संचरण वाले क्षेत्रों के यात्रा पर जाने वाले मुसाफिर वे सरल सी सावधानियां बरतने के लिए प्रोत्साहित हों, जिनके जरिए इस खतरनाक बीमारी को रोका जा सकता है।

फुटनोट

*फताई और हनीफत अदीसा ने सेंटर्स फॉर डिसीज़ कंट्रोल एंड प्रीवेंशन को उनके बच्चों की बीमारी के बारे में साक्षात्कार करने, मामले की चर्चा डॉक्टरों के साथ करने और इस कहानी को प्रकाशित करने की अनुमति दी थी।

खुद को मलेरिया से सुरक्षित रखें

- यात्रा से 4-6 हफ़्ते पहले अपने डॉक्टर से मिलें।
- जैसे निर्धारित की गई हों, ठीक वैसे ही अपनी मलेरियारोधी गोलियां लें।
- मच्छरों के काटने से बचें, विशेष रूप से रात को।
- यदि आप यात्रा के दौरान या उसके बाद बीमार पड़ जाएं, तो हो सकता है कि वह मलेरिया हो: फ़ौरन डॉक्टर को दिखाएं।